शास्त्री-III

Date 29.10.20
Page 2

कुण्डमण्डपादिनिर्माणार्थं दिक्साधनप्रकारः —

वृत्ते समभूगते तु केन्द्रस्थितशङ्कोः क्रमशो विशत्यपैति।
छायाग्रमिहापरा च पूर्वा ताभ्यां सिद्धतिमेरुदक् च याम्या॥

अन्वयः — समभूगते वृत्ते केन्द्रस्थितशङ्कोः छायाग्रं क्रमशः विशति, इह अपरा च अपैति पूर्वा ताभ्यां सिद्धतिमेः उदक् याम्या च।

तारा - समभूगते समीकृतभूमौ निर्मिते वृत्ते, केन्द्रस्थितशङ्कोः छायाग्रं यत्र यस्मिन् बिन्दौ, विशति प्रवेशं करोति, इह अत्र, अपरा पश्चिमादिक्, स्यात् अत्र च अपैति बहिर्गच्छति, तत्र पूर्वादिक् स्यात्, ताभ्यां पश्चिमपूर्वबिन्दुभ्यां सिद्धतिमेः सम्पादितमत्स्याकृतेः, उदक् उत्तरादिक्, याम्या दक्षिणा च दिक् स्यात्।

भावार्थः - जल से सींचकर समतल की हुई भूमि में इष्ट त्रिज्या परिमित सूत्र से एक वृत्त खींचें। उस वृत्त के बीच में १२ अंगुल का शङ्कु रखें। प्रातःकाल उस शंकु की छाया का अग्रभाग वृत्त को जहाँ स्पर्श करें, वहाँ पश्चिम दिशा का चिह्न करें और सायंकाल उस शंकु की छाया का अग्रभाग जहाँ वृत्त से बाहर पड़े, वहाँ पूर्वदिशा का चिह्न करें। तत्पश्चात् पूर्व-पश्चिम के चिह्नों की सीध पर एक सीधी रेखा खींचें। वह पूर्वापर रेखा होती है। उस पूर्वापर रेखा पर वृत्त के मध्य से एक लम्ब खींचें। उस लम्ब के ऊपर और नीचे जहाँ उक्त वृत्त से स्पर्श करे, वह दक्षिणोत्तर रेखा होती है।

विशेष - यह दिनमानसाधन उस दिन किया जाता है, जिस दिन ३० घड़ी का दिन और ३० घड़ी की रात होती है।

डॉ० सुदिष्ट कुमार
सहा० आचार्य (ज्योतिष)
रा०उ० सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।

तत्पश्चात पलभा को 2 से गुणा करें। जो गुणनफल मिले उसको दक्षिण समझें और उसमें मध्यमभुज दक्षिण हो, तो जोड़ दें तथा मध्यमभुज उत्तर हो, तो घटा दें। जो अंक शेष रहे वह दक्षिणभुज होता है। यदि मध्यमभुज उत्तर हो तथा 2 से गुणा की हुई पलभा की संख्या से अधिक हो, तो उक्त द्विगुणित पलभा को मध्यमभुजा में से घटा दें। जो शेष रहे, वह अंगुलादि उत्तरभुज होता है।

अपनी इष्टछाया के बराबर सूत्र (तागा) से समतल भूमि पर एक वृत्त बनाकर उस वृत्त के बीच में एक 12 अंगुल का शंकु गाड़ें। उस शंकु की प्रवेश तथा निर्गमकाल की छाया के अग्रभाग से भुज के अंगुल बराबर शलाका लेकर देखें। यदि वह भुज दक्षिण हो, तो दक्षिण की ओर अथवा उत्तर हो, तो उत्तर की ओर पूर्णछाया के समान अर्थात् वृत्त की दूसरी रेखा को स्पर्श करने लगे, ऐसी एक रेखा खींचे। इस रेखा को दक्षिणोत्तर रेखा कहते हैं। इसके बाद उस दक्षिणोत्तर रेखा को आधा करके उस बिन्दु और वृत्त के मध्य बिन्दु की सीध को लेकर एक रेखा खींचे। यह रेखा पूर्वापर रेखा कही जाती है।

डॉ० सुधीर कुमार
सहा० प्राध्यापक (ज्योतिष)
रा०उ०सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।

महत्त्वावम

त्रिप्रश्नाधिकारः शास्त्री-II Date 29.10.20 Page 1

यन्त्रजोन्नतांशातः कर्णः कर्णतो यन्त्रजोन्नतांशसाधनम् —

यन्त्रलवोत्थक्रान्तिलवाप्ता वसिवमदस्राः स्यादिह कर्णः।
कर्णहतास्तेस्यादपमोऽतो बाहुलवाः स्युर्यन्त्रलवा वा ॥

अन्वयः— यन्त्रलवोत्थक्रान्तिलवाप्ताः वसिवमदस्राः इह कर्णः स्यात्। ते कर्णहताः अपमः स्यात्। अतः बाहुलवाः वा यन्त्रलवाः स्युः।

तारा— यन्त्रमवोत्थक्रान्तिलवाप्ताः (वसिवमदस्राः) यन्त्रांशजनितक्रान्तिभागेन भक्ताः, वसिवमदस्राः २८८ इह प्रकरणेऽस्मिन्, कर्णः स्यात्। ते २८८ कर्णहताः कर्णसङ्ख्यया भक्ताः, अपमः क्रान्तिः, स्यात्। अतः बाहुलवाः भुजांशाः, वा अथवा यन्त्रलवाः स्युः।

भावार्थः— यन्त्रज उन्नतांश से क्रान्तिसाधन करके वसु ८ इन ८ दस्र २ = २८८ में भाग दें। जो लब्धि प्राप्त हो, वह अंगुलादिकर्ण होता है।

पूर्वोक्त २८८ में कर्ण का भाग देने पर जो लब्धि प्राप्त हो, वह क्रान्ति होती है। इसी क्रान्ति से भुजांश साधन करें। उस भुजांश को ही यन्त्रजोन्नतांश कहते हैं।

डॉ० सुधीर कुमार
सहा० प्राध्यापक (ज्योतिष)
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।

प्रकारान्तरेण दिग्भुजसाधनप्रकारः —

वार्कक्रान्तिलवाक्षकर्णनिहतिर्भाकर्णनिघ्नीनभो-
क्षाग्न्याप्ता रविदिग्भुजो यमदिशाद्विघ्नाक्षभासंस्कृ
केन्द्रे भोत्थवृत्तौ सपूर्णगुणवद्भागतात्प्रदेयो भवेद्-
याम्योदक्सभुजार्धकेन्द्रनिहितारज्जुस्तु पूर्वापरा।

अन्वयः — वा अर्कक्रान्तिलवाक्षकर्णनिहतिः, भाकर्णनिघ्नी, नभोऽक्षाग्न्याप्ता रविदिग्भुजः स्यात्, यमदिशाद्विघ्नाक्षभासंस्कृतः, केन्द्रभोत्थवृत्तौ पूर्णगुणवद् भागतात् प्रदेयः सः याम्योदक् भवेत्, भुजार्द्धकेन्द्रनिहिता रज्जुः तु पूर्वापरा।

तारा - वा अथवा, अर्कक्रान्तिलवाक्षकर्णनिहतिः सूर्यक्रान्त्यंशपलकर्णयोराहतिः, भाकर्णनिघ्नी छाया-कर्णेन गुणिता, नभोऽक्षाग्न्याप्ता ३१२० सङ्ख्यया भक्ता, लब्धिसमः, रविदिग्भुजः सूर्यस्य यो गोलः तद्-दिग्भुजः, स्यात्। सः यमदिशा द्विघ्नाक्षभा संस्कृतः दक्षिणदिग् द्विगुणितपलभया लब्धसंस्कारः, शेषो दिग्भुजः स्यात्। अस्यायं भावार्थः — एकदिक्सम्ब-न्धियोगः, पृथग्दिक्सम्बन्धे सति हीनः कर्तव्यइति।

केन्द्रभोत्थवृत्तौ केन्द्रात् छायाव्यासार्द्धेन कृते वृते, भागतात् छायाया अग्रभागात्, पूर्णगुणवत् पूर्ण-ज्यासमः, प्रदेयः दातव्य इति। सः भुजः, याम्योदक् दक्षिणोत्तर रेखः भवेत्, भुजार्द्धकेन्द्रनिहिता भुजार्धबिन्दु-केन्द्रबिन्दुगता, रज्जुः रेखा, तु पूर्वाऽपरा स्यादित्याशयः।

भावार्थः - सूर्य की क्रान्ति को कर्ण से गुणा करें। गुणनफल को छायाकर्ण से गुणा करें। जो गुणनफल हो, उसमें नभोक्षादि ३१२० का भाग दें। जो लब्धि मिले, वह मध्यम भुज होता है। सायनसूर्य उत्तरगोल में हो, तो उत्तर होता है और सायनसूर्य दक्षिणगोल में हो, तो दक्षिण होता है।

P.T.O